

(ख) श्रीजू महिमा

करुणा उर धारि (३४)

राधे राधे बंशी रही पुकार ।

बंशी बट पर यमुना तट पर रहे हैं बाट निहारि कान्हा

काहे मान कियो मनमोहन करुणा उर धारि राधे

क्यासि क्यासि वृषभान नन्दिनी टेरत बारहूं बार—कान्हा

रोवति अति विलपति कदम्ब तरु तन की नांहि सम्भार—राधे

व्याकुल बन तरु बेली खग मृग बहावत आन्सुनि धार—

सपदि चलो प्रिय प्राण संजीवन मानो विनय हमार—

निज परिछाई देखि करी रिस संध्रम उर ते टारि—

होय प्रसन्न उठि चली श्रीराधा गज गामिनि सुकमारि—

परम हर्ष दोऊ मिले परस्पर स्वामिनी नन्द कुमार—

मैगसि चन्द्र मिले अब मानो तन धर छबि श्रंगार—